ॐ नमो भगवते राम कृष्णाय नमः ।

निरञ्जनं नित्यमनन्त रूपं भक्तानु कम्पाधृत विग्रहं वै
ईशावतारं परमेशमीड्यं तं राम कृष्णं शिरसा नमामः

श्री राम कृष्ण आरत्रिकम्

ॐ स्थापकाय च धर्मस्य सर्वधर्मस्वरूपिणे
अवतार वरिष्ठाय राम कृष्णाय ते नमः

राम कृष्ण विवेका नन्द सेवा सदन (समाज सुधार समती)

Fine Art Press, Srinagar.

श्री रामकृष्ण आरात्रिकम् ॥

संसारार्णव घोरे यः कर्णधारस्वरूपकः
नमोऽस्तु रामकृष्णाय तस्मै श्री गुरवे नमः।

भयंकर संसार सागर से पार ले जाने में जो हमारे कर्ण-धार हैं उन गुरुमूर्ति भगवान श्री रामकृष्ण को बारंबार नमस्कार हो।

यत्पाद्तोयं भवरोगवैद्यो
यत्पादपांशुविर्मलत्वसिद्धये
यन्नाम दुष्कर्म निवारणाय
तं रामकृष्णं शरणं प्रपद्ये ।

जिन का चरणामृत संसार रूपी दीर्घ रोग के लिये महान औषधि है, जिन के चरण-कमलों से स्पर्षित धूल मनुष्य को परम पवित्र बनाती है, एवं जिस का नाग स्मरण दुष्कर्मों को निवार्ण करता है। उन भगवान श्रीरामकृष्ण की मैं शरण लेता हूँ।

खंडनभव बंधन जगवन्दन वन्दि तोमाय।
निरञ्जन नररूपधर निर्गुण गुणमय ॥

नित्य शुद्ध परम पवित्र एवं निर्गुण होते हुए भी अनंत गुणराशि के आधार प्रभु आप हम पर कृपा करने के लिए नर शरीर को धारण करने वाले तथा हमारे आवागमन रूपी भवपाषों को नष्ट करने वाले हैं। जगत् के वन्दनीय आप को हमारा बारम्बार प्रणाम हो।

मोचन अघदूषण जगभूषण चिद्‌घनकाय।
ज्ञानांजन-विमल-नयन विक्षणे मोहं जाय॥

जगत् के भूषण आपकी अलौकिक दिव्य काया घनी भूत चित का स्फार है। करुणामय! आप हमारे पाप कृत्यों का मोचन करते हैं। ज्ञान रूपी अञ्जन से सुशोभित आपके स्वच्छ विमल नयनों को देखकर हमारी मलिनता तथा मोह दूर हो जाते हैं।

भास्वर भावसागर चिर-उन्मद प्रेम-पाथार।
भक्तार्जन-युगल-चरण तारण भव पार॥

दया निधे! आप हमारे मूर्खता रूपी अंधेरे को दूर करने वाले प्रकाशमान सूर्य हैं। अनन्त भाव राशि के सागर एवं नित्य निरंतर परम प्रेम में निरत रहने वाले आप के चरण युगल भक्तों की पूजा का विषय है जो चरण कमल उन्हें भवसागर से पार लगाते हैं।

जृम्भित युगईश्वर जगदीश्वर योग सहाय।
निरोधन समाहित-मन निरखि तव कृपाय॥

इन्द्रियों के निरोध तथा मन के समाहित रखने मनुष्य आपकी कृपा का पात्र बन जाता है और उस कृपा द्वारा उस को सहज ही इस बात का ज्ञान हो जाता है कि जगदीश्वर आप अपनी अहैतुक दया के प्रसर रूप दिव्य लीला से अपनी योगमाया के सहारे जगत में मानव मात्र को सन्मार्ग पर चालना कराने के लिए युग के ईश्वर रूप से अवतीर्ण होते रहते हैं।

भंजन दुख-गंजन करुणाघन कर्म कठोर।
प्राणार्पण जगततारण कृतंन-कलि-डोर॥

करुणा के निधान हे महान कर्म वीर प्रभु! आप हमारे सब प्रकार के दुःख ज्वाओं को दूर करने वाले भक्त जनों के कलि-मलरूप बन्धनों को छेदन कर के आप उनको भवसागर से पार लगाते हैं।

वंचन काम कांचन अतिनिंदित-इन्द्रिय राग।
त्यागीश्वर हे नरवर देह पदे अनुराग॥

तुच्छ इन्द्रिय सुख एवं काम कांचन की भोगस्पृहा से परे अलौकिक त्याग के वपुषमान नरदेह धारी प्रभु, हमें कृपया

अपने चरण-कमलों का अनुराग दे दें।

निर्भय गत-संशय दृढ़निश्चयमानसवान्।

निष्कारण-भक्त-शरण त्यजि जाति कुलमान॥

जो भक्त सत्‌असत्‌विचारआश्रित निर्भय, संशयरहित तथा दृढ भावना के साथ आप की शरण में जाते हैं उन भक्त जनों के जाति एवं कुल के भेद की परवा न करते हुए आप उन्हें अपने अहेतुक कृपा से आश्रय दान कर धन्य करते हैं।

संपद् तव श्रीपद् भव गोष्पद-वारि यथाय।

प्रेमार्पण समदरशण जगजनदुःख जाय॥

आप के चरण कमलों के आश्रय द्वारा इस संसार सागर को पार करना इतना सहज हो जाता है जितना कि गौ के खुर से पृथ्वी पर बने चिन्हों में भरे पानी को पार होना सहज है। सत्य ही आप के श्री पद हमारे लिये परम संपद रूप हैं। हे समदर्शी प्रभु! अनन्त प्रेम में आप के पास आत्म समर्पण करने मे मनुष्य को सब दुःखों से छुटकारा हो सकता है।

नमो नमो प्रभु वाक्य-मनातीत मनोवचनैकाधार।

ज्योतिर ज्योति उज्वल हृदि-कंदर तुमि तम भंजनहार

मन वाणी द्वारा जिस का वर्ण नहीं हो सकता है, तथापि

जो हमारे मन वाणी के आधार हैं, ऐसे आप प्रभु को हम बारं-बार प्रणाम करते हैं।

प्रत्येक हृदय कंदर में अपार उज्जवल ज्योतिरूप से विराजमान प्रभु आप हमें अज्ञानांधकार से मुक्त करते हैं।

धे-धे-धे-लंग रंग भंग, बाजे अंग संग मृदंग।
गाइछे छन्द भक्त वृन्द, आरति तोमार॥

आप के चरणों में आश्रय लेने वाले हम आपकी आरति का यथा विहित गान कर रहें हैं।

जय जय आरति, तोमार हर हर आरति तोमार।
शिव शिव आरति तोमार, गुरु गुरु आरति तोमार॥

नरदेव देव जय जय नरदेव

शक्तिसमुद्र समुत्थतरंगं, दर्शितप्रेम विजृम्भित रंगम्
संशयराक्षस नाशमहास्त्रं, यामि गुरुं शरणं भववैद्यम्

देव देवियों के स्वरूप नरदेहधारी हे भगवान श्री रामकृष्ण आप की सदा जय हो।

शक्ति-रूप महा समुद्र से विराट तरंग के रूप में उत्पन्न हो कर परम प्रेम की नाना प्रकार की दिव्य लीलाओं को जो दर्शाने वाले हैं एवं जो संशयरूपी भयानक राक्षस को नाश

करने वाले महास्त्र हैं उन भवरोग को मिटाने वाले अति प्रवीन वैद्यरूप श्री गुरु की मैं शरण लेता हूँ।

अद्वयतत्व समाहित चित्तं
प्रोज्वल भक्ति पटावृत वृतं।
कर्म कलेवरम् अद्भुतचेष्टं,
यामि गुरं शरणं भववैद्यम् ॥

जो अद्वय तत्व में केंद्रीभूत हो कर प्रोज्वल भक्ति के द्वारा अपने को प्रकाशित करके उस प्रोज्वल भक्ति की अभिव्यक्ति कर्मरूप दिव्य शरीर को धारण करने वाले हैं तथा हमारे कल्याण के निमित्त अपूर्व अलौकिक दिव्य लीलामय चेष्टायें करने वाले हैं। उन भवरोग को मिटाने वाले अति प्रवीन वैद्यरूप श्री गुरु की में शरण लेता हूँ।

नरदेव देव जय जय नरदेव
नरदेव देव जय जय नरदेव।
ॐ पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते
ओं शान्तिः ! शान्तिः !! शान्तिः !!!

॥ श्रीरामकृष्ण-स्तोत्रम् ॥

ॐ ह्रीं ऋतं त्वमचलो गुणजित् गुणेड्य:
नक्तन्दिवं सकरुणं तवपादपद्मम् ।
मोहङ्कषं बहुकृतं न भजे यतोऽहम्
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥१॥

भक्तिर्भगश्च भजनं भवभेदकारि
गच्छन्त्यलं सुविपुलं गमनाय तत्त्वम् ।
वक्त्रोद्धृतोऽपि हृदये न च भाति किञ्चित्
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥२॥

तेजस्तरन्ति त्वरितं त्वयि तृप्ततृष्णा:
रागेकृते ऋतपथे त्वयि रामकृष्णे ।
मर्त्यामृतं तव पदं मरणोर्मिनाशम्
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥३॥

कृत्यं करोति कलुषं कुहकान्तकारि
ष्णान्तं शिवं सुविमलं तव नाम नाथ ।
यस्मादहं त्वशरणो जगदेकगम्य
तस्मात्त्वमेव शरणं मम दीनबन्धो ॥४॥

॥ देवी–स्तोत्रम् ॥

प्रकृतिं परमामभयां वरदां,
नररूपधरां जनतापहरां ।
शरणागतसेवकतोषकरीं,
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥१॥

गुणहीनसुतानपराधयुतान् ,
कृपयाद्य समुद्धर मोहगतान् ।
तरणीं भवसागरपारकरीं,
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥२॥

विषयं कुसुमं परिहृत्य सदा,
चरणाम्बुरुहामृतशान्तिसुधां ।
पिब भृङ्गमनो भवरोगहरां,
प्रणमामि परां जननीं जगताम् ॥३॥

कृपां कुरु महादेवि सुतेषु प्रणतेषु च,
चरणाश्रयदानेन कृपामयि नमोऽस्तु ते ॥४॥

लज्जापटावृते नित्यं सारदे ज्ञानदायिके,
पापेभ्यो नः सदा रक्ष कृपामयि नमोऽस्तु ते ॥५॥

रामकृष्णगतप्राणां तन्नामश्रवणप्रियां,
तद्भावरञ्जिताकारां प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥६॥

पवित्रं चरितं यस्याः पवित्रं जीवनं तथा,
पवित्रतास्वरूपिण्यै तस्यै कुर्मो नमोनमः ॥७॥

देवीं प्रसन्नां प्रणतार्तिहन्त्रीं, योगीन्द्रपूज्यां युगधर्मपात्रीं ।
तां सारदां भक्तिविज्ञानदात्रीं, दयास्वरूपां प्रणमामि नित्यं ॥८॥

स्नेहेन बध्नासि मनोऽस्मदीयं, दोषानशेषान् सगुणीकरोषि ।
अहेतुना नो दयसे सदोषान्,
स्वाङ्के गृहीत्वा यदिदं विचत्रम् ॥९॥

प्रसीद मातर्विनयेन याचे,
नित्यं भव स्नेहवती सुतेषु ।
प्रेमैकविन्दु चिरदग्धचित्ते,
विषिञ्च चित्तं कुरु नः सुशान्तम् ॥१०॥

जननीं सारदां देवीं रामकृष्णं जगद्गुरुं,
पादपद्मे तयोः श्रित्वा प्रणमामि मुहुर्मुहुः ॥११॥

॥ देवी–प्रणामः ॥

सर्व-मंगल-मांगल्ये शिवे सर्वार्थ-साधिके ।
शरण्ये त्र्यंबके गौरि नारायणी नमोऽस्तु ते ॥
सृष्टि-स्थिति-विनाशानां शक्तिभूते सनातनि ।
गुणाश्रये गुणमये नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
शरणागत-दीनार्त परित्राण-परायणे ।
सर्वस्यार्ति-हरे देवि नारायणि नमोऽस्तु ते ॥
जय नारायणि नमोऽस्तुते ! जय नारायणि नमोऽस्तु ते ! !
जय नारायणि नमोऽस्तु ते ! ! !